प्रकाश एवं छाया का कलाकार

दस भाई बहनों के परिवार में से एक सुदर्शन नाग सिनेमैटोग्राफर बनकर करीब पचीस साल तक बॉलीवुड में सक्रिय रहे। पूना के फिल्म संस्थान के शुरुआती दौर के इस छात्र ने लंबा संघर्ष किया। फिल्मों को स्टूडियो से निकाल कर लोकेशन पर शूट करने के नए युग का सूत्रपात किया। हिमाचल मित्र ने उनके काम, उनकी सोच और उनके दर्शन के बारे में लंबी बातचीत की। यहां पेश हैं उस रोचक बातचीत के कुछ महत्वपूर्ण अंश -

हिमि : बातचीत की शुरुआत, शुरू से ही करते हैं...

नाग : ऐसा है कि मेरी पैदाईश जयसिंहपुर, लम्बा गांव की है। ये 1941 की बात है। और मेरे जितने भी भाई बहन हैं सब शिमला में पैदा हुए हैं। माता-पिता 1935 में शिमला चले गये थे। उसके पहले लाहौर में थे पर वो मुझे याद नहीं है। मेरे पिता चित्रकार थे उस समय हिमाचल में एक ही नाम था रतनलाल नाग। उनके सौ दो सौ चेले थे। गवर्नमेंट का काम करते थे। हमारे दादा जी बोटी थे। विवाहों में रसोई बनाते थे। मेरी स्कूली पढ़ाई शिमला में हुई। 1956 में मैट्रिक किया। उसके बाद शिमला में ही इंटरमीडियेट सांइस करके ग्रेजुयेशन का इग्जाम दिया था कि हमारा परिवार दिल्ली शिफ्ट हो गया। ढली में हमारा सेबों का बगीचा था। आप यह समझिये कि एक हिमाचली होने के नाते मैंने अपने हाथों से करीब ढेड़-एक हजार पेड़ लगाए हैं।

पूना फिल्म इंस्टीट्यूट का एक ऐड आया था। मैंने तो पढ़ा नहीं। हमारे फादर ने, हमारे चाचा ने पढ़ा था, जो मुझे लेने के लिए आए थे। हम पूना पहुंच गये। तब तक मैंने जिंदगी में दिल्ली के आगे कोई जगह नहीं देखी थी। दिल्ली के आगे, न कोई जान न पहचान, न कोई रिश्तेदार। यों समझो चंडीगढ़ बन रहा था और दिल्ली हमारी लिमिट थी। वहां फोटोग्राफी के लिए ऑल इंडिया से कोई आठ सौ लड़के आए थे और दस लेने थे। माफ करना जी, हम शिमले के पहाड़िये। वहां बड़े-बड़े कानवेंट स्कूलों में पढ़े पटर-पटर अंग्रेजी बोलने वाले। मुझे बात समझ में नहीं आयी मुझे क्यों सिलेक्ट कर लिया गया।

हिमि : आपने पहले फोटोग्राफी में कुछ किया होगा।

नाग : नहीं जी।

हिमि : आप फोटोग्राफी में ही क्यों गये? डायरेक्शन वगैरह में क्यों नहीं?

नाग : एक तो डायरेक्शन के लिए बीए जरूरी था। मेरा तब तक रिजल्ट नहीं आया था। दूसरा, मैं साईंस स्टूंडेंट था। तीसरा, हमारी फर्म का नाम था नाग एंड सन्स। हम लोग गवर्नमेंट के लिए सिनेमा स्लाईड्स बनाते थे। फादर का थोड़ा बहुत असर था हमारे ऊपर। उस समय हमारे पास चार-चार पांच-पांच फोटोग्राफर काम करते थे। डेवलपिंग प्रिंटिंग और पैंटिंग्स फादर करते थे और फोटोग्राफी के लिए आदमी रखे थे। दिल्ली में बोर्ड, साइन बोर्ड थोड़ी चित्रकला भी करते थे। चित्रकला में मेरे पिता के दोस्तों में सरदार शोभा सिंह थे। अंदरेटा में उनका हमारे घर में बहुत आना-जाना था।

हिमि : आपके पिता यह काम शिमला में भी करते थे?

नाग : शिमला में पहले करते थे। बाद में, आजादी के बाद सरकारी दफ्तर दिल्ली जाना शुरू हो गये। हमारे पास उस समय डीएवीपी की 14 भाषाओं में दस हजार सिनेमा स्लाईड्स बनती थीं जैसे नलके में से पानी जा रहा है। पानी बचाईये।

मैंने पूना में तीन साल का फोटोग्राफी का कोर्स किया। 1965 में कोर्स करके यहां आया। उस जमाने में किसी को पता ही नहीं था कि फिल्म इंस्टीट्यूट नाम की भी कोई चीज होती है। किताब पढ़ कर भी फोटोग्राफी हो सकती है, ऐसा कोई मानता ही नहीं था। पहले क्या था जी गुरू चेला प्रथा थी - एक आदमी एक गुरू धारण करेगा। पांच दस साल रगड़ा खाएगा। जिसको जितना कुछ आता है थोड़ा बहुत सीख लेगा। जैसा होता है न अंधे लोग। किसी ने हाथी का पैर पकड़ लिया वो बोलेगा हाथी ऐसा है दूसरा बोलेगा हाथी ऐसा है। सब बेहिसाब अनसिस्टमैटिक। हमको तो कोई घुसने ही नहीं देता था। मतलब हम किसी को बोलें कि हम फोटोग्राफी कर सकते हैं तो लोग हम पे हंसते थे। मतलब वो टफ टाईम था। दो बातें थीं। देखो जी दुनिया में जब कोई नई चीज आती है तो उसको स्वीकार करने में टाइम लगता है। कोई मानता नहीं है। इधर हमारा कोई था नहीं। दूर तक का रिश्तेदार नहीं मुंबई में। हमारे कांगड़े का भी कोई बड़ा प्रोड्यूसर नहीं था। एक तेजनाथ जार साहब थे जिन्होंने फिल्में बनाई हैं। आपको पता ही होगा एक थे जुगल किशोर जी, उनकी भी डेथ हो गई है सालों हो गये। ये दो ही थे और कोई नहीं। और हर एक के अपने-अपने यूनिट होते हैं। अपना अपना काम होता है। फिर मैंने डाक्युमेंटरी की, खादी ग्रामोद्योग की। वो लोग मुझे कैमरा लेकर भेज देते थे।

बाप मेरा करोड़पति। हमें नोकरी मिली Institute of Mass Communication, Delhi में Cameraman Head की। मेरे प्रोफेसरों ने एप्लाई किया उनको नहीं मिली, मुझे मिली। पौलेंड फिल्म इंस्टीट्यूट में प्रोफेसर की। Institute of Design Ahmedabad में। सब बिना इंटरव्यू के। मैं नही गया।

हिमि : आपको फिल्मों में ही काम करना था।

नाग : हां जी। अब आए हैं तो नाच गाने ही देखें। जरा मजा तो आए। फिर नया नया टीवी शुरू हुआ। टीवी तो शुरू हुआ कैमरामैन कहां से लाओगे ? तब वीडियो इतना था नहीं मूवी केमरा ही चलता था। आफर थी पर दिल्ली

गया नहीं। यहां भटकते रहे। गेस्ट हाउस में रह रहे हैं। पांच साल जबरदस्त स्ट्रगल। पर मैंने एक बात देखी है, अब लगता है स्ट्रगल की थी। उस वक्त नहीं लगता था।

हिमि : एक जुनून था....

नाग : हां आपने ठीक पकड़ा, एक जूनून होता है। अब निकले हैं तो कुछ करना चाहिए। फिर करते करते मैंने 1970 में पहली फिल्म की। उस जमाने में रिवाज था कि कुछ भी शूटिंग करनी हो तो स्टूडियो में करनी पड़ेगी। जैसे ये घर है, एक कमरा है। कमरे का सैट बनेगा। ऊपर छतें नहीं होती थीं। लाइटें लगतीं थी। आपने स्टूडियोज देखे हीं होंगे। मैं वो पहला आदमी हूं जिसने स्टूडियो से बाहर पहली बार लोकेशन पर शूटिंग की। फिल्म का नाम था चेतना। बीआर इशारा की फिल्म थी। इशारा जी भी कांगड़ा के हैं। भरवाईं के आसपास के बचपन में आठ-दस बरस की आयु में घर से भाग आये फिर मुड़ कर वापस गये ही नहीं। बी आर इशारा की यह फिल्म चेतना कुदरती ही बहुत चल गयी।

हिमि : ये फिल्म आपको मिली कैसे?

नाग : क्या हुआ कि इंस्टीट्यूट से हर साल दस लोग आना शुरू हो गये। फोटोग्राफी में, डायरेक्शन में। आपस में मिलना जुलना शुरू हुआ। फिल्म में वहां एक्टिंग का कोर्स भी आरंभ हो गया। ये अजीब चक्कर हो गया। अनिल धवन, रेहाना सुलतान, शत्रुघ्न सिन्हा ये सब वहां से आए हुए लोग हैं। इंडस्ट्री में तूफान आ गया इन सब लोगों को लेकर।

किसी ने कहा गये हैं खाली डब्बे लेकर लौटेंगे। ऐसे फिल्म बनती है क्या? पुणे में नागरा नाम की एक एक्टर का बंगला था, उसने दे दिया, बोली यहां रहो और शूटिंग करो। तो हमने पूरी फिल्म वहां बनाई।

उसके बाद मैंने बी आर इशारा के लिए चार पांच फिल्में कीं। उसके बाद 70 से 95 तक मैंने काम किया। 25 साल पीछे मुड़ कर नहीं देखा। और मैं गया किसी के पास नहीं। ये भी रिकार्ड है। ये अकड़ू होते हैं न कांगड़िये, सच्ची बात है। हम लोगों में अहम बहुत होता है। ऐमें ही नहीं किसी के आगे झुकना। क्यों झुकें? तो मैं गया नहीं कहीं। जो आता था मेरे पास ही आता था। अब तो थोड़ी तकलीफ हो गयी, बीमार हो गया। फोटोग्राफी में क्या है जी 9 बजे की शिफ्ट है। आप नौ बजे पहुंचो। एक्टर आये न आये। कोई नहीं पूछता है। फिर रात को दस बजें या 11 बज जाएं। लेबोरियस जॉब है।

हिमि : किन लोगों से आपकी नजदीकी रही?

नाग : मेरे बड़े करीबी दोस्त रहे सुनील दत्त साहब। उनसे मरते दम तक मेरा रिश्ता रहा। मेरे हर जन्म दिन पर उनका लैटर जरूर आता था। हैप्पी बर्थडे। एक डैनी डेंगजपा है जो मुझे पहाड़ी भाई बोलता है और मैं उसको पहाड़ी भाई बोलता हूं। वो सिक्किम के पहाड़ों का है मैं हिमाचल के। बड़े बड़े प्रोड्यूसरों के साथ काम किया। एक बार एक प्रोड्यूसर को मैंने कहा, ऐसा ऐसा करो। उसने कहा अगर मैं हिट हो गया तो तुम्हें डायरेक्टर बना दूंगा। उसने मुझे डायरेक्टर बना दिया। मैंने चार फिल्में डायरेक्ट कीं

हिमि : ये किसके साथ कीं?

नाग : के सी बोकाड़िया। बड़ी फिल्में बनाई हैं उन्होंने। कोई तीस-चालीस। उनकी दो-तीन फिल्में डायरेक्ट कीं। एक फिल्म थी असली नकली। उसमें पहली बार रजनीकांत था, जो कि महाराजा ही है वहां का और शत्रुघ्न सिन्हा। शायद ये 1987 की बात है। म्यूजिक हमारा अमूमन यही रहता था लक्ष्मीकांत प्यारेलाल। बाकी स्टार कास्ट में अमरीश पुरी होते थे। अमरीश पुरी भी शिमला के थे।

हिमि : असली नकली के बाद कौन सी फिल्म की?

नाग : असली नकली को पचास दिन तक चलने की ट्रॉफी मिली। उसके बाद फिल्म की इंसाफ कौन करेगा। दुनिया भर की स्टारकास्ट-धर्मेंद्र, रजनीकांत, जयाप्रदा, प्राण साहब। और भी, जितने भी हैं गुलशन ग्रोवर, शक्ति कपूर

> बाकी भाई बहन शिमला और दिल्ली में हैं। दो चाचे जयसिंहपुर में हैं। बेटी मुंबई में ही पंजाबी परिवार में ब्याही है। दामाद जेट एयरवेज में हैं। बेटा ईवेंट मैनजमेंट करता है।

ये सब। यह सिल्वर जुबली हुई थी। उसके बाद मैंने एक सीरियस सी फिल्म बना दी। अच्छा, उस फिल्म से मेरे एक्टर इतने प्रभावित थे बोले, ये फिल्म जो है उतरनी नहीं है। सुनील दत्त और शत्रुघ्न सिन्हा ने फिल्म प्रोड्यूस की, बोले ये फिल्म मैं बनाऊंगा। प्राण साहब थे उसमें। उस फिल्म में मैंने एक आदमी को चान्स दिया फिल्म लाईन में - उसका नाम है आदित्य पंचोली। उस फिल्म का नाम था धर्मयुद्ध। वो कुछ ज्यादा ही सीरियस हो गयी।

हिमि : अच्छा, यह बताइए कि फिल्म में डाइरेक्टर, सिनेमैटोग्राफर और स्क्रीनप्ले राइटर का आपसी संबंध कैसा होता है ?

नाग : केमरामैन दो किस्म के होते हैं। एक होता है क्रियेटिव केमरामैन और एक होता है मैकनिकल केमरामैन। इतनी लाईट दी फोटो खेंची और बस हो गया। एक देखता है स्टोरी। इसका मैं पड़दे पर कैसा मूड बनाऊंगा। वो अच्छा डायरेक्टर बन सकता है।

हिमि : डाइरेक्टर और सिनेमैटोग्राफर

नाग : पहले जमाने में डायरेक्टर और केमरामैन को मियां बीवी बोलते थे।जैसे महबूब खान थे। उनके कैमरामैन का नाम भूल रहा हूं। उन्होंने मदर इंडिया की। दोनों का ऐसा मेलजोल था। राजकपूर का परमानेंट कैमरामेन था राजू करमरकर। उसके बिना उन्होंने काम ही नहीं करना है।

हिमि : हम लोग सुनते हैं कि बड़े स्टार कैमरा अपनी तरफ ज्यादा रखवाते हैं?

नाग : नहीं ऐसा कुछ नहीं है। वो लोग डाइरेक्टर को बोलते हैं। वही निपटता है कैमरामैन नहीं। कैमरामैन के साथ एक खास बात है शूटिंग के पहले या शूटिंग के बाद कैमरामैन को कोई पूछे या न पूछे पर जब शूटिंग चल रही है तो उस वक्त सबसे बड़ा किंगकांग वही है। हर हीरो, हर हीरोईन चमचागीरी.... क्योंकि जब क्लोआप आते हैं न तब मालूम पड़ता है कि हिरोइन कितनी खूबसूरत है। उसको खूबसूरत या बदसूरत दिखाना सिर्फ एक आदमी के हाथ में है। और कैमरामैन के रेट इसी चीज पर तय होते हैं। एक फिल्म आई थी मेरे महबूब। उसमें साधना के बीस पचीस क्लोआप हैं। जी सिंह करके एक सरदार जी कैमरामैन थे। दुनिया पागल हो गई, वो ऐसी लगती थी हर क्लोआप में। उसमें डिफ्यूजन है। लाईट डिफ्यजू की, सॉफ्ट लाईट की, मतलब ये सब टेक्नीकल बातें हैं।

हिमि : इसी से जुड़ता हुआ सवाल है, सुंदरता क्या होती है?

नाग : जहां तक फिल्म का ताल्लुक है ये जो नाक-नक्श हैं न आदमी की आंखें, नाक, कान, बाल, फिजिकल प्रजेंस बॉडी वगैरह, ये सुंदरता है, लेकिन जो हाव भाव होते हैं न वो उसको बढ़ाते हैं या कम करते हैं। आपकी शकल कितनी भी अच्छी हो, लेकिन आपके जेस्चर और एक्शन सही नहीं हैं तो आप सुंदर नहीं हैं। ये मेरा मानना है। फिल्म की सुंदरता में बहुत लोगों का हाथ रहता है। हर एक का अपना मेकपमैन और हेयरस्टाईलिस्ट होता है। इस सुंदरता को और सुंदर बनाता है कैमरामैन। लाईटिंग से। एक चेहरे को कितने तरीके से मोल्ड किया जा सकता है ये कैमरामैन जानता है। एक अच्छा कैमरामेन शक्ल देख कर ही जान लेता है कि मैं इसको यहां से लाईट दूंगा तो इसकी शक्ल ऐसी निखरेगी। फोटाग्राफर किसी सब्जेक्ट को लाईट एंड शेड में ही देखता है?. . . . अच्छा फोटोग्राफर कभी भी फ्लैट फोटोग्राफी नहीं करता है।... ध्यान रखना पड़ता है आंखें बाहर को निकली हैं या अंदर को हैं या नार्मल हैं।

हिमि : आपने कोई ऐसा एक्सपेरिमेंट किया हो जो बहुत अच्छा रहा हो ?

नाग : वो जो मैंने लोकेशन पर शूटिंग की, देट वाज अलटीमेट एक्सपेरीमेंट।

हिमि : उसमें आपने किताबों में जो पढ़ा था, उसका इस्तेमाल किया?

नाग : वो बात ऐसी है, वो बोले लाइट कहां रखेगा? मैं बोला, मेरी मर्जी चाहे जहां रखूं। मैंने डायरेक्ट लाइट दी ही नहीं।

हम तो पहाड़ों के रहने वाले हैं।

मैंने दीवार पर एक कपड़ा लगा कर बाउन्स कर दिया लाईट को। तो लाईट एकदम सॉफ्ट हो गई। हीरो हिरोइन ने जब अपने आप को देखा तो बोले हमारे फेस पर हार्डनेस है ही नहीं।

हिमि : इधर फोटोग्राफी में क्या फर्क आया है?

नाग : ज्यादा मैकेनिकल हो गया और आसान भी हो गया।

हिमि : ह्यूमन एक्सपेरीमेंट के लिए कितनी जगह बची है?

नाग : है ही नहीं। अब तो एडीटर एक्सपेरीमेंट कर रहा है। आप कुछ भी शूटिंग करके उसको दे दो। कौनसा कलर कहां चेंज करना है कर देगा। कपड़े बदल देगा। आपके सीन सीनरी बदल देगा। उड़ा देगा फेंक देगा। गिरा देगा जो मर्जी कर लेगा। डबल रोल होता था। मैंने फिल्म की थी गजब, उसमें धर्मेंद्र का डबल रोल था। उस जमाने में डबल रोल करना मुसीबत था। मतलब ये कि जैसे मैंने यह कैमरा रखा है, इसके दस फुट तक कोई आएगा नहीं। अभी क्या है? कुछ भी नहीं है। फिल्म की एक स्पीड होती है वो टाइम में 50 एएसए की स्पीड। पांच सौ हजार हो गई है। अब तो बहुत जगह ऐसा हो गया है कि हमको लाईट देने की जरूरत ही नहीं होती है। आप बाहर जा रहे हैं। रात का टाइम है बड़ा अच्छा बाजार हो, लाईटिंग हो। कुछ करने की जरूरत ही नहीं है। पहले जमाने में तो मुसीबत थी।

हिमि : आपको क्या लगता है कि दुनिया पहले से खूबसूरत हुई है या बदसूरत हुई है?

नाग : दोनों ही है। शुरू से यही होता आया है आगे भी यही होता रहेगा। और एक चीज मैं अपने देश के बारे में बता रहा हूं। हमारे यहां मटेरिलिजयम बढ़ना अच्छा नहीं है। पहाड़ों के लोग अकेले बैठे हैं, वो सब देख सोच रहे हैं। उनके किये हुए काम ज्यादा करके प्योर होते हैं। बड़े बड़े शहरों में आ के गंदगी फैल जाती है। बड़े शहरों में आ के भी जो अपनी आईडेंटिटी बना के रखे मैं उसको बहुत मानता हूं।

हिमि : आप हिमाचल के हैं आपके लिए ये बात क्या माइने रखती है?

नाग : बहुत ज्यादा माइने रखती है। बचपन से जो हमने देखा है वो तो यहां हो नहीं सकता है। वहां के रीति रिवाज हैं। जैसे लोग बोलते हैं कि देवभूमि है। तब हम छोटे थे हमें समझ नहीं आयी देवभूमि क्यों बोलते हैं। अब समझ में आती है देवभूमि। चीज का मूल्य तब मालूम पड़ता है जब वह चीज आप से दूर हो। इसका सबसे बड़ा उदाहरण ये है कि मैंने सारा भारत घूमा है। बड़ी-बड़ी नदियों के इर्दगिर्द हमने शूटिंग की है। मुझे एक भी नदी अच्छी नहीं लगी। आप बोलेंगे ये क्या मतलब हुआ। मतलब ये हुआ कि जयसिंहपुर में अपने घर के नीचे व्यास वह रही है। उसमें आपको मच्छी नीचे तक नजर आती है। अब वो पानी हमने बचपन से देखा हुआ है। तो अब कोई नदी की बात करता है तो हमारे जेहन में वो ही रहता है।

हिमि : आप तो कलाकार हैं। एक कलाकार अपने जीवन में अपने पास क्या बटोर के रखना चाहता है?

नाग : सुंदर यादें जो हैं न, उससे अच्छी चीज कोई नहीं है। जीवन के अच्छे पल। मतलब, खुशी की बात नहीं कर रहा हूं। मुझे यानी दिल को भाए यानि कि मुझे एक करोड़ रुपया मिला ये कोई दिल को भाने वाली बात नहीं है। एक बार एक रात को मैं शिमला में कहीं जा रहा था। कोई आदमी बांसुरी बजा रहा है। सुनूं कहां से आवाज आ रही है, पता नहीं कहां से। उस आदमी को मैंने आज तक नहीं देखा न उस आदमी को ये पता होगा कि मैं नीचे बैठा हूं। लेकिन मैं उस क्षण को भुला नहीं सकता हूं। हमें मिलने की जरूरत भी नहीं है उससे।

हिमिः शायरी कर रहे हैं आप .....

नाग : नहीं नहीं मैं उससे मिल कर क्या करूंगा। वो कोई पंद्रह-बीस मिनट तक बजाता रहा। वो कौन था क्या था? एक तो वातावरण का भी असर होता है। चीड़ के पेड़ की हवा के अलावा कुछ है नहीं और उसमें बांसुरी की आवाज है। एक बजा रहा है। उसे पता नहीं है नीचे बैठा कोई सुन रहा है। तो ये क्षण होते हैं। बाकी हम लोग बड़े बड़े क्षणों को ढूंढते हैं। बड़ा क्षण होता नहीं है जीवन में। बड़ा क्षण यों नहीं मिलता है। ढूंढ उजड़े हुए लोगों में वफा के मोती। ये खजाने शायद तुम्हें सरावों में मिलें।

सुदर्शन नाग की प्रमुख फिल्में

- चेतना
- जरूरत
- मिलाप
- बुनियाद
- एक मुट्ठी आसमान
- जहरीला इंसान
- फिर वही रात (फिल्म फेयर के लिए नामित)
- गज़ब
- जिंदा दिल